हिंदी भाषी होकर ओगिल्वी इंडिया तक आने का सफर सरल नहीं था: श्रीकांत त्रिवेदी

शहर बदले, कई ऑफिस बदले, पर मुझे इस विश्वविद्यालय ने बदला : श्रीकांत त्रिवेदी

मैं श्रीकांत त्रिवेदी हूँ,

मैं श्रीकांत त्रिवेदी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के एक बहुत ही साधारण परिवार से निकलकर आज मुंबई के ओगिल्वी इंडिया जैसे प्रतिष्ठित विज्ञापन संस्थान में काम कर रहा हूं। यह सफर केवल एक करियर की कहानी नहीं, बल्कि मेरे जीवन की एक ऐसी यात्रा है जिसमें डर, मज़ा, संघर्ष और सीख सभी शामिल हैं। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं, तो हर मोड़ पर कुछ ऐसे चेहरे और यादें सामने आती हैं, जिनके बिना मेरा यह सफर अधूरा होता।

मेरा पहला परिचय विज्ञापन की दुनिया से उस वक़्त हुआ, जब मैं बिलासपुर में पत्रकारिता का एक वर्षीय डिप्लोमा कर रहा था। उस दौरान पवित्र सर गेस्ट लेक्चर देने आए। उन्होंने जिस सरलता और गहराई से विज्ञापन के बारे में बताया, मैं मंत्रमुग्ध हो गया। उनकी क्लास से ऐसा लगा कि यह क्षेत्र कितना रोचक और संभावनाओं से भरा है। लेक्चर के बाद मैंने हिम्मत जुटाकर उनसे पूछा, 'सर, मैं भी विज्ञापन में करियर बनाना चाहता हूं। कहां से शुरू करूं?' उन्होंने बस एक ही जवाब दिया -'माखनलाल चले आओ।' यही वो क्षण था जिसने मेरी जिंदगी की दिशा बदल दी।

जब मैं माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल पहुंचा, तब मेरे पास कोई लैपटॉप नहीं था, अंग्रेज़ी बेहद कमजोर थी और कंप्यूटर कैसे चालू करते हैं, यह भी नहीं पता था। लेकिन यह विश्वविद्यालय सिर्फ एक संस्था नहीं, एक संस्कार है। यहाँ आपको कमतर महसूस कराने की जगह, बेहतर बनाया जाता है। यहां के हर शिक्षक ने मुझे सहारा दिया, संबल दिया, और मेरे भीतर उस आत्मविश्वास को जन्म दिया जिसकी बदौलत मैं आज अपने जीवन में कुछ अच्छा कर पा रहा हूं।

प्रशांत सर ने मुझे सिखाया कि कंप्यूटर डरने की चीज नहीं है-वे मेरे पहले टेक गुरु थे। उनकी मदद से मैंने कंप्यूटर की बुनियादी बातें सीखी, जो बाद में मेरे करियर में बेहद काम आईं। जया मैम की क्लास से मुझे समझ आया कि अंग्रेज़ी से डरने की बजाय उसे समझ कर अपनाना चाहिए। उन्होंने अंग्रेजी का डर मेरे दिल से निकाल दिया। वे हर छात्र को आत्मीयता से पढ़ाती थीं, जिससे हम सभी का आत्मविश्वास बढ़ा। गरिमा मैम ने हमें सिखाया कि क्रिएटिविटी कोई तकनीकी स्किल नहीं है,वह एक एहसास है। उन्होंने कहा था, 'अगर तुम्हारा दिल भावनाओं को पकड़ने में माहिर है, तो तुम किसी भी ब्रांड को छू सकते हो।' गरिमा मैम की क्लास की वजह से ही बाद में मुझे एडवरटाइजिंग में काम करते हुए कई कठिनाइयों से निकलने का रास्ता मिला।

मीता मैम, मौली सर, शुक्ला सर... सभी ने हमें ज्ञान तो दिया ही, पर कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि हम कम हैं या किसी प्रतियोगिता में पीछे हैं। वे हमेशा हमें प्रोत्साहित करते रहे। विश्वविद्यालय के दो साल मेरे जीवन का पुनर्जन्म थे। यहाँ न केवल तकनीकी ज्ञान मिला, बल्कि जीवन जीने की कला भी सीखी।

मेरे करियर की शुरुआत आखिरी सेमेस्टर में भोपाल की एक क्रिएटिव एजेंसी Aquarius Advertising से हुई। यहाँ मैंने असली दुनिया की पहली झलक देखी। मैंने सीखा कि क्लाइंट की अपेक्षाएं क्या होती हैं, ब्रांड क्या सोचता है और यूज़र क्या महसूस करता है-इन तीनों के बीच कैसे सेतु बनाना होता है। क्लास में सीखी चीजें मेरे बहुत काम आईं, और एक खास बात यह भी है कि मैंने देवनागरी लिपि में हिंदी टाइपिंग भी विश्वविद्यालय में ही सीखी, बिना किसी टाइपिंग सेंटर को पैसे दिए। यह छोटी-छोटी बातें बाद में मेरे लिए बड़ी मददगार साबित हुईं।

मुझे आवाज की दुनिया में काम करने का मौका मिला, जब मैं Red-FM से जुड़ा। रेडियो ने मुझे storytelling सिखाई-कैसे कुछ शब्दों से किसी के दिल तक पहुंचा जाए। गरिमा मैम की रेडियो स्क्रिप्ट वर्कशॉप ने यहां भी मेरी बहुत मदद की। रेडियो की दुनिया ने मुझे संवाद की ताकत समझाई, जो विज्ञापन में भी बेहद जरूरी है।

फिर मेरा अगला पड़ाव था Indore की Purple Focus, जहां मैंने डिज़ाइन, प्रोडक्शन और पिचिंग के गहरे अनुभव लिए। नया शहर, नया माहौल, नई चुनौतियां-ये सब मेरे लिए एक नई सीख लेकर आए। यहां मेरे काम को सराहा गया, तो लगा मैं सही रास्ते पर हूं। इस एजेंसी में काम करते हुए मैंने टीम वर्क, समय प्रबंधन और ग्राहक संतुष्टि जैसे महत्वपूर्ण गुण सीखे।

और आज मैं Ogilvy India, Mumbai में काम कर रहा हूं। यह वही संस्था है जिसका नाम मैंने किताबों में पढ़ा था। फेविकोल, सेंटर फ्रेश, कैडबरी जैसे बड़े-बड़े ब्रांड्स जिनका काम मैंने केवल देखा था, उनके लिए काम करने का मौका मिला। जब मैं इन ब्रांड्स की टीम के साथ बैठता हूं, तो कहीं न कहीं मेरा मन माखनलाल के उन क्लासरूम्स में होता है, जिसने मुझे यहां तक पहुंचाया है।

मुझे आज भी याद है, जब पहली बार मैंने ब्रांड मीटिंग में प्रेजेंटेशन दी थी, तो मेरा मन और हाथ दोनों कांप रहे थे। लेकिन उसी वक्त स्वर्गीय अभिजीत बाजपेयी जी के सिखाए प्रेजेंटेशन स्किल्स बहुत काम आए। उनकी क्लास ने मुझे आत्मविश्वास दिया कि मैं अपनी बात प्रभावी तरीके से रख सकता हूं।

इस विश्वविद्यालय की एक और खास बात यह है कि यहां आपको देश के कोने-कोने से आए ऐसे साथी मिलते हैं, जो जिंदगी की क्लास से भी पढ़कर आते हैं। ये सभी ऐसे हीरे होते हैं, जिन्हें पता नहीं होता कि उनकी चमक दुनिया को आश्चर्यचकित कर सकती है। उन साथियों से भी जो सीखा, आज वो सब काम आता है। माखनलाल में मिले गुरु, साथियों और उस माहौल ने मेरी जिंदगी में नई दिशा की नींव रखी।

आज जब मैं देखता हूं कि एक साधारण परिवार से आए हम जैसे लोगों के लिए, जो ना तो लाखों की फीस दे सकते हैं, ना उनके पास ज़्यादा एक्सपोजर होता है, ऐसे लोगों के लिए माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय किसी वरदान की तरह है। और यह केवल हमारे जैसे लोगों के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए एक आशीर्वाद है।

मैंने कई शहर बदले, कई ऑफिस बदले, पर मुझे इस विश्वविद्यालय ने बदला। ना सिर्फ मुझे बदला, मेरा नज़रिया भी बदला। यहाँ की शिक्षा ने मुझे न केवल प्रोफेशनल बनाया, बल्कि एक बेहतर इंसान भी बनाया।

कहते हैं कि माता-पिता और गुरु का ऋण कभी नहीं चुकाया जा सकता, और मैं भी इस विश्वविद्यालय के ऋण को कभी नहीं चुका पाऊंगा। इस विश्वविद्यालय में बिताए गए दो साल मेरी जिंदगी के सबसे ज़्यादा सीखाने वाले साल थे। ऐसा कभी लगा ही नहीं कि हम बहुत मेहनत कर रहे हैं या संघर्ष कर रहे हैं, क्योंकि इस विश्वविद्यालय का माहौल, टीचर्स और दोस्त हमेशा साथ थे।

आज अगर मैं कुछ हूं, तो उसकी सबसे बड़ी वजह विश्वविद्यालय है, जिसने मुझे सिर्फ पढ़ाया नहीं,बनाया है। मेरे शिक्षक, मेरे साथी, और यह संस्थान मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। मैं अपने अनुभव से यही कहना चाहता हूं कि अगर आपके अंदर जुनून है, सीखने की चाह और इस विश्वविद्यालय जैसा शिक्षा का मंदिर हैं तो कोई भी बाधा आपको रोक नहीं सकती।

मैं जो शिक्षा और डिग्री यहाँ से लेकर निकला उसी में अपना चमकदार करियर बना कर एक मुकाम पर हूँ तो जाहिर है कि मैंने अपने शिक्षकों को अपने भीतर आत्मसात किया है... कक्षा में उनकी बताई छोटी-छोटी बातों ने मुझे बड़े-बड़े मोर्चों पर सफल बनाया है.... यही इस जगह की सार्थकता है... ज्ञान यहाँ बह रहा है जिम्मेदारी हमारी है कि हम इसका आचमन करें.

विश्वविद्यालय बैच

एमए विज्ञापन एवं जनसम्पर्क पाठ्यक्रम (एमए एपीआर 2007-09)

श्रीकांत त्रिवेदी, क्रियेटिव डायरेक्टर, ओगिल्वी इंडिया, मुम्बई